ISSN: 2456-947X, Vol. I, Issue. IV, March-2018

अनघ

(An International Journal of Hindi Language, Literature and Culture)

Journal Homepage: http://cphfs.in/research.php

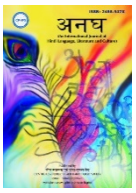

आगे की सुध लेय

प्रो. गंगा प्रसाद विमल

सेवानिवृत्त प्रोफेसर,

भारतीय भाषा केंद्र,

भाषा साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान,

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

आगे बढ़ने की बीती कहानियाँ मनुष्य के भीतरी स्वरूप का दर्शन करा देती हैं। वर्षों पहले जब अणुबम नहीं बना था नये-नये आविष्कार अपने शत्रुओं के दमन के लिए होते रहे और ये अपने शत्रु भी कौन थे ? दूसरी गाथा तो परम रोचक है। ये वे लोग थे जो आपके मतवाद का समर्थन नहीं करते थे। आपके धर्म विश्वास को नहीं मानते थे, आपकी राज्यीय प्रणाली को नहीं मानते थे। थे वे सब आदमी यानी समूचे मनुष्य परंतु जिस भी सत्ता के लिए व्यक्ति या कुछ व्यक्ति बाधा बने वे सीधे-सीधे शत्रु बन गए ।

असल में आगे की ओर सोचना है तो इस दृष्टि से भी सोचना ही पड़ेगा कि मनुष्य का दुष्मन आख़िर मनुष्य ही क्यों हो ? इसका अर्थ है कि हमारी दुनिया दो तरह की है। एक वे जो सत्ता के अनुकर्ता हैं और दूसरे वे जो सत्ता के प्रतिपक्षी हैं। परंतु यह वर्गीकरण भी पूर्ण नहीं है। देखना होगा और यह आगे की ओर देखना ही है कि भविष्य में मनुष्य के संवर्धन के लिए ही सब कुछ हो। परंतु इसमें एक पेंच है और वह समूचे लोक के विरुद्ध जा पड़ता है अगर सिर्फ़ मनुष्य से संवर्धन के बारे में सोचें।

तो आगे की सुध का एक विवेक सम्मत रास्ता बनेगा, समूची सृष्टि के संवर्धन की कोशिश । पर यह क्या संभव हो पायेगा ? और इसका उत्तर अपने वर्तमान से खोजना पड़ेगा। हमारे वर्तमान में प्रतिरोधी धाराओं का एक धारावाहिक निरंतर बढ़ रहा है। उसके उदाहरण हर जगह मिल जायेंगे।

अब अपने अतीत में विश्वमंचों का योगदान देखें। यूरोप में एक बार बहस हुई कि दुनिया को आगे बढ़ाने में हिंसा का हाथ है। अगर मनुष्य में अपने शत्रु को मारने की इच्छा नहीं होती तो बारूद का निर्माण नहीं होता। बारूद से पहले वीरता के कारनामे तलवारों द्वारा व्यक्त किए जाते थे। महाभारत की लड़ाई में तीरों, भालों, मुद्गरोंका उपयोग हुआ था। किंतु महाभारत की लड़ाई की वीरता धनुष प्रचालन तक सीमित नहीं रही। कारण सिर्फ़ यह था कि न्याय के लिए युद्ध अनिवार्य है। अन्याय के विरुद्ध आज भी हमारे लोक में समुदाय के रूप में सामूहिक विरोध की ताकत का इस्तेमाल करना जायज है। परंतु सत्य, न्याय, निर्बलों की हिमायत ही अगर बारूद और अणुबम के आविष्कार के पीछे दृष्टि ही तो उसका स्वागत करना चाहिए। आज स्थिति विचित्र है। विश्व कूटनीति ने नये ढंग की राष्ट्रीयताओं को जन्म दिया है।

आगे की सोचने के लिए इसी बिन्दु से आरंभ करना पड़ेगा क्योंकि जो औजार समूचे लोक को नष्ट करने में सक्षम हैं वे थोड़ा भी निर्बलों की सहायता या न्याय या सत्य की लड़ाई का आभास नहीं देता। वहाँ लगता है वर्चस्व के लिए बड़ी ताकत बनना। अतः सारे विश्व समुदाय को इस बारे में एकमत होना पड़ेगा कि बड़े औजारों के भण्डार विश्व हित में या तो नष्ट किए जायें या विश्व

वैज्ञानिक ऐसी वैज्ञानिक विधि सृजित करें जिससे उन औजारों का ग़लत प्रयोग हो ही नहीं सके।

असल में इस धारणा को समझना होगा कि मनुष्य को समझाने के लिए हिंसा आवश्यक नहीं है। महात्मा गाँधी ने बीसवीं शताब्दी में बारूद से लदे बड़े साम्राज्य को सिर्फ़ सिविल नाफरमानी से तोड़ दिया था। उनका सामुदायिक सत्याग्रह और व्यक्तिगत भूख हड़ताल कई एटम बमों के मुकाबले ज़्यादा शक्तिशाली साबित हुए।

यह स्वाभाविक है कि इक्कीसवीं शताब्दी का इंसान आगे की सुध अपने वैज्ञानिक औजारों में ही इस्तेमाल करे। कम-से-कम एक सार्वजनिक असहयोग की मुहिम तो इंटरनेट के माध्यम से भी कोई ऊर्जावान युवा समूह जारी कर सकता है।

आप अन्याय करने वालों को पहचानें, लूटने वालों को पहचानें, आतंकवादियों को पहचानें तब तो ज्ञान का फायदा है कि हम आगे की सुध ले रहे हैं। फिलहाल तो यह लगता है कि चालाक व्यापारी वैज्ञानिकों से साँठ-गाँठ कर ऐसे विचारों का प्रचार कर रहा है, जिससे उपभोक्ता ज़्यादा-से-ज़्यादा उसके मंत्रों का उपयोग कर उसे ज़्यादा फायदा दिलाए।

आगे की सुध लेने का सूत्र यहीं से उठाना पड़ेगा क्योंकि दुनिया में दवाई निर्माता कंपनियाँ जीवन रक्षक दवाओं की कीमत इतनी बढ़ा रहे हैं कि इससे गरीब की पकड़ से वे दूर हो जाती हैं। कहने का अर्थ यह है कि इंटरनेट अगर जागरूक बनाया जा सके तो बहुत-सी चीज़े सामाजिक दबाव के दायरे में आ जायेंगी।

उपरोक्त थोड़े से उदाहरणों से हम यह अनुदान तो लगा ही लेते हैं कि भविष्य दृष्टि सृष्टि को सर्वांग विकास के लिए वैज्ञानिक छंलागें मारने की प्रेरणा दे। यह इसलिए भी अनिवार्य है कि अब हर चीज़ पूरी दुनिया से जुड़ी लगती है। और हम देखते हैं कि आपदाओं के विश्व के सभी लोग कुछ-न-कुछ योगदान देने के लिए आगे आ जाते हैं। वास्तव में विश्व कई दृष्टियों से भविष्य चिन्ता के कारण ही नये-नये अभियानों की ओर मुड़ रहा है। परंतु यह धारणा ख़त्म होनी चाहिए कि इस पर केवल संपन्न देशों का अधिकार है। आप अगर संपन्न देशों के संपन्न होने के गणित को ठीक तरह साधें तो पता चलेगा विश्व के बड़े प्रतिशत लाभांश का हिस्सा अमीर देशों ने खुद ही नहीं उत्पादित किया। उन्होंने विश्व स्रोतों का जो दोहन किया है अगर उसी का हिसाब माँगा जाए तो पता चलेगा अमीर देशों ने अपने वर्चस्व की धौंस से यह सब विश्व की समूची विश्व लोकवासी की जागीर से खींचा है। आज अमीर देश आतंकवादियों से डरे हुए हैं। सदियों पूर्व वे स्वयं एक आतंकवादी दस्तों के रूप में विश्व को गुलाम बनाने के लिए अभियान रत हुए है। ज़रूरी है कि अमीर देश प्रायश्चित स्वरूप गरीब मुल्कों से माफी माँगे और अब न्यायपूर्ण ढंग से प्रकृति से चुराये दिक और काल के लिए, अपने पुराने आतंकवादी कारनामों के लिए विश्व जनता से माफी माँगें।

प्रयोजन केवल इतना है कि आगे का संसार आदमी के लिए, लोकवासियों के लिए राजनैतिक और प्रशासनिक रूप से सुखद हो -- विश्व नागरिकों की यही कामना है। परंतु आगे की सुध लेने से पहले पीछे की समीक्ष करनी आवश्यक है। पीछे क्या-क्या नहीं हुआ -- जिसे आगे होना चाहिए या पीछे आदमी ने जो प्रतिगामी कदम उठाये हैं वे कैसे सुधारे जायें या आज जो राजनैतिक चेहरा अपना वर्चस्व कायम करने के लिए अपनी रणनीतियाँ बदल रहा है उसका भी तो जायज़ा भोले-भाले लोगों को लेना चाहिए।

आगे की सुध में यह जानना बहुत जरूरी है कि राजतंत्रों को मनुष्य ने क्यों उखाड़ फेंका था ? वे भयंकर रूप से भृश्ट हो गए थे। आज का प्रजातांत्रिक राजतंत्र भी भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरा है। राजतंत्रों में भयंकर वंशवाद था। आज प्रजातंत्र की देखा देखी धन उपजाने वाले सभी व्यवसायों में भयंकर रूप से वंशवाद पनपने लगा है। विश्व प्रतिभाओं की यह अदेखी किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं की जानी चाहिए पूँजीपति घराने भृश्टाचरण और वंषवाद के सबसे बड़े पोशक हैं। नई प्रजातंत्रीय विवेक प्रणाली को इसकी सुध ज़रूर लेनी चाहिए ताकि भविष्य का वातावरण लोक पोषक हो और विश्वपोषक हो।

उन युद्धों को याद कीजिए जो न्याय के लिए लड़े गए हैं। आगे की ओर देखने का अर्थ यह है कि हम न्याय के सम्मानप्रद स्वरूप का स्थापन कर सकें।

भविष्य में क्या हो -- कैसा हो ? आगे की सुध लेने का रास्ता इधर से ही जाता है ।